शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 जून 2015
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

नारीवादी आंदोलन और हिन्दी उपन्यासों पर उसका प्रभाव

रोशन कुमार (शोधार्थी)
हिन्दी विभाग
बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर बिहार विश्वविद्यालय
मुजफ्फरपुर, बिहार, भारत

शोध संक्षेप.

नारीवाद पुरूषों के समकक्ष स्त्रियों की राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक समानता का आंदोलन है। यह आंदोलन मुख्यत: ग्रेट.ब्रिटेन और संयुक्त राज्य अमेरिका में शुरू हुआ। इसकी जड़ें 18वीं सदी के मानवतावादी और औद्योगिक क्रांति में थी। नारियाँ पहले पुरूषों के मुकाबले शारीरिक और बौद्धिक रूप से हीनतर समझी जाती थीं। नारीवादी आंदोलन वास्तव में 1848 में शुरू हुआ, जब एलिजाबेथ कैंडी स्टैण्टन, लुक्रेसिया कफिन मोर और कुछ अन्य ने न्यूयार्क में एक महिला सम्मेलन करके नारी स्वतंत्रता पर एक घोषणा पत्र जारी किया, जिसमें पूर्ण कानूनी समानता, पूर्ण शैक्षिक और व्यावसायिक अवसर, समान मुआवजा और मजदूरी कमाने का समान अधिकार तथा वोट देने के अधिकार की माँग की गई थी। 1920 में संयुक्त राज्य अमेरिका में महिला को भी वोट देने का अधिकार मिला। हर भाषा.साहित्य में नारीवादी आंदोलन प्रभाव पड़ा। हिन्दी साहित्य में भी इसका प्रभाव देखा जा सकता है। इस्मत चुगताई के कागजी है पैरहन से हम भारतीय नारीवादी लेखन का प्रारंभ मान सकते हैं। हिन्दी में प्रभा खेतान, कृष्णा सोबती, मैत्रीय पुष्पा, मृणाल पांडे, मन्नू भंडारी, नासिरा शर्मा, अनामिका, कात्यायनी, मनीषा कुलश्रेष्ठ, अलका सरावगी, मेहरून्निसा परवेज, कुसुम अंसल, मंजुल भगत आदि लेखिकाओं ने योगदान दिया।

प्रस्तावना.

नारीवाद पुरूषों के समकक्ष स्त्रियों की राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक समानता का आंदोलन है। नारीवाद शब्द का उदय फ्रेंच शब्द फेमिनिजम से 19वीं सदी के दौर में हुआ। उस समय इस शब्द का प्रयोग पुरूष के शरीर में स्त्री गुणों के आ जाने अथवा स्त्री में पुरूषोचित व्यवहार के होने के संदर्भ में किया जाता था। 20वीं सदी के प्रारंभिक दशकों में संयुक्त राज्य अमेरिका में इस शब्द का प्रयोग कुछ महिलाओं के समूह को संबोधित करने के लिए किया गया जो स्त्रियों की एकता, मातृत्व के रहस्यों तथा स्त्रियों की पवित्रता इत्यादि मुद्दों पर एकजुट हुई थी। बहुत ही जल्द इस शब्द का प्रयोग उन प्रतिबद्ध महिला समूहों के लिए किया जाने लगा जो स्त्रियों की सामाजिक स्थिति में परिवर्तन के लिए संघर्ष कर रही थीं। उनकी इस बात में गहरी आस्था थी कि स्त्रियाँ भी मनुष्य हैं। दक्षिण एशिया में नारीवादी संबंधी कार्यशाला नारीवाद क्या है, यह समझाते हुए कहा गया, "पितृ.सत्तात्मक नियंत्रण व परिवार, काम की जगह व समाज भौतिक और वैचारिक स्तर पर औरतों के काम, प्रजनन और यौनिकता के दमन व शोषण के प्रति जागरूकता तथा स्त्रियों व पुरूषों द्वारा इन मौजूदा परिस्थितियों को बदलने की दिशा में जागरूक सक्रियता ही नारीवाद है।**1**

यद्यपि स्त्रियों के लिए व्यापक अवसर प्रदान किए जाने की आवाज पहले उठ चुकी थी जिसमें पहला और महत्वपूर्ण दस्तावेज स्त्रियों के

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 जून 2015
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

अधिकारों की बहाली (1792) का था। फ्रांसीसी क्रांति के दौरान भी महिला रिपाब्लिकन क्लबों ने माँग की थी कि आजादी, समानता और भ्रातृत्व का व्यवहार बिना किसी लिंग भेद के लागू होना चाहिए। आगे चलकर नारीवादी आंदोलन दो खेमे में बँट गया। एक खेमा राष्ट्रीय महिला पार्टी का था जो पुरूष के समकक्ष स्त्रियों की बराबरी की वकालत करता था जबकि दूसरे खेमे का यह कहना था कि महिलाओं के लिए कुछ संरक्षणात्मक कानून बनाए जाए। 1946 में नारी की दशा पर संयुक्त राष्ट्र संघ ने एक आयोग गठित किया, जिसका दायित्व विश्वभर की महिलाओं के लिए समान राजनीतिक, आर्थिक और शैक्षिक अवसर का अधिकार दिलाना था। नारीवाद या नारी.मुक्ति आंदोलन खासतौर से संयुक्त राज्य अमेरिका में अपने एक नये रूप में प्रकट हुआ। राष्ट्रीय महिला संगठन का 1966 में गठन किया, जिसकी 1970 की दशक के आरंभ में 400 से अधिक स्थानीय शाखाएँ खुल गयीं। राष्ट्रीय महिला संगठन और दूसरे समूहों ने गर्भपात सुधार, संघीय राज्य द्वारा अनुपोषित शिशु देखभाल केंद्र, महिलाओं के लिए समान वेतन एमहिलाओं की पेशों में तरक्की और महिलाओं के लिए शिक्षा, राजनीतिक प्रभाव और आर्थिक सत्ता हासिल करने की दिशा में सभी कानूनी और सामाजिक बाधाओं के खत्मे के लिए दबाब डाला। 1970 के आस.पास अमेरिका का नारीवादी आंदोलन की दिशा भटकाव की शिकार हो गई। महिला हाथों में पोस्टर लिए हमें आजाद करो के नारे लगाती हुई सड़कों पर उतर आयी। सुशान बेसनेट ने अपनी पुस्तक फेमिनिस्ट एक्सपीरिएन्सेज में लिखा है "70 के दशक के प्रारंभिक वर्षों में जिस किसी अमरीकी नारीवादी के संपर्क में आयी मैंने पाया कि वे पूरी तरह से लैंगिकता की बातों में ही डूबी हुई है। उनसे बात होने पर बहस महिलाओं के सामने हमेशा उनके यौन जीवन के दौरान आने वाली समस्याओं की ओर मुड़ जाती थी।...यौन सुख के प्रश्न असाधारण रूप से महत्वपूर्ण हो गए थे तथा महिलाओं की यौन स्वतंत्रता को ही उनकी मुक्ति मान लिया गया था।**2**

नारीवादी आंदोलन फ्रेंच रिवोल्यूशनए इंग्लिश रिवोल्यूशनए अमेरिकन रिवोल्यूशन और द्वितीय विश्व युद्ध से काफी प्रभावित रहा। इसके अलावा कुछ पुस्तकों का भी जबरदस्त प्रभाव नारीवादी आंदोलन पर रहा। कुछ ग्रंथ विशेष रूप से नारीवाद का प्रतिनिधित्व करते हैं :

मेरी वोलंस्टोन क्राफ्ट कृत ए विंडीकेशन ऑफ दि राइट मॅन, विंडीकेशन ऑफ दि राइट आफ वीमेन, सीमोन द बोउवार कृत द सेकंड सेक्स, बेट्टी फ्राइडन कृत द फेमिनिन मिस्टिक, जॉन स्टुअर्ट मिल कृत द सब्जेक्शन ऑफ वीमेन, हेनरिक इब्सन कृत डोल्स हाउस, केट मिलेट कृत सेक्सुअल पालिटिक्स, जर्मन ग्रीयर कृत द फीमेल यूनॅक विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

नारीवाद के कई चेहरे हैं. उदारवादी नारीवाद, अतिवादी नारीवाद, मार्क्सवादी नारीवाद, समाजवादी नारीवाद सांस्कृतिक नारीवाद, इस्लामी नारीवाद। ये सभी प्रकार के नारीवाद अन्ततोगत्वा औरतों की बेहतरी की ही बात कहते हैं और कारणों को समझकर औरतों की स्थिति को सुधारने के लिए वचनबद्ध हैं।

हर भाषा.साहित्य में नारीवादी आंदोलन प्रभाव पड़ा। हिन्दी साहित्य में भी इसका प्रभाव देखा जा सकता है। प्रभा खेतान ने द सेकंड सेक्स का हिन्दी अनुवाद स्त्री उपेक्षिता नाम से किया। प्रभा खेतान ने विभिन्न संदर्भों, पृष्ठभूमियों, परिवेशों और संस्कृतियों में नारी नियति का चित्रण किया

है, जिसका सारांश छिन्नमस्ता की प्रिया के शब्दों में यह है."औरत कहाँ नहीं रोती, सड़क पर झाड़ू लगाते हुए खेतों में काम करते हुए एयरपोर्ट पर बाथरूम साफ करते हुए या फिर सारे भोग.ऐश्वर्य के बावजूद पलंग पर रात-रात भर अकेले करवटें बदलते हुए हजारों सालों से इनके ये आँसू बहते जा रहे हैं।**3**

मन्नू भंडारी ने 'आपका बंटी' में तलाकशुदा माँ से उत्पन्न संतान की पीड़ा को दिखलाया है। दाम्पत्य.संबंध के तनाव एवं बिखराव तथा बच्चे की समस्या को एक नये परिप्रेक्ष्य में चित्रित किया है जहाँ नायिका शकुन अपने अहम् की तुष्टि के लिए अपने बेटे बंटी का इस्तेमाल करती है और उसके जरिए अपने पति को प्रताड़ित करती है। प्रथम दृष्टया बंटी की स्थिति के लिए शकुन जिम्मेदार लगती है, लेकिन जब हमारा सामना शकुन के संवाद "लोग सिर्फ मुझसे चाहते है कि मैं उनकी चाहनाओं की पूर्ति करती रहूँ, बदले में कुछ न चाहूँ, मैंने क्या अपराध किया है। बस यही तो किया है कि जिससे यह अहसास बना रहे कि मैं जिंदा हूँ"**4** से होता है तो हमें फिर से पुनर्विचार करना पड़ता है।

कृष्णा सोबती के उपन्यास 'सूरजमुखी अंधेरे के' में रक्तिका या रती नामक लड़की की कथा है। बचपन में किसी लड़के से यौन संपर्क हो जाने के कारण उसे उपहास मिलता है और वह कुंठाग्रस्त हो जाती है। वह पुरूष दर पुरूष से गुजरते हुए सोलहवें युवक दिवाकर में अपनी देह यात्रा को विराम देती है। क्योंकि दिवाकर ने केवल उसके वर्तमान को चाहा है।

'मित्रो मरजानी' उपन्यास में मित्रो के जरिए हिंदी उपन्यास की नायिका के चरित्र एवं व्यक्तित्व को एक नया आयाम दिया है। वह पारम्परिक रूढ़ियों में कैद होकर जीने वाली स्त्री नहीं है। वह पुरूषों की तरह बैलोस और बिंदास है। जरूरत पड़ने पर उसे मर्दों की तरह गाली देना भी आता है और लात-घूसें से बात करना भी। हिंदी उपन्यास में ऐसा बोल्ड.चरित्र दूसरा नहीं मिलता जो अपनी आशाओं और आकांक्षाओं के अनुसार तथा शारीरिक माँगों के अनुरूप एक पुरूष की तरह अपनी काम भावना को पुन:परिभाषित करती है। इस क्रम में उसके मार्ग में मूल्य, नैतिकता और मर्यादा जैसे जो भी सामाजिक मानदण्ड बाधक बनकर आते हैं, उसकी धज्जियाँ उड़ाने में उसे परहेज नहीं होता हैं।

मृदुला गर्ग के प्राय: सभी उपन्यासों में स्त्री-अस्मिता का संघर्ष दिखाई पड़ता है। चाहे वह 'चितकोबरा' हो या 'उसके हिस्से कि धूप' या फिर 'कठगुलाब'। वे कठगुलाब में विपिन एवं नीरजा के जरिए विवाह का मखौल उड़ाते प्रश्न खड़ा करती हैं. 'ये औरतें मरजानियाँ दूसरी औरतों का साथ देने की बजाए जल्लाद मरद को ही पहलू में समेटने लगती हैं, अपना खालीपन भरने के लिए हम हमेशा पति और प्रेमी की खोज क्यों करते हैं, इसलिए कि वह हमें बच्चा दे सकता है।**5**

उषा प्रियंवद ने 'पचपन खंभे लाल दीवारें' तथा 'रुकोगी नहीं राधिका' के जरिए स्त्री के दुख एवं तकलीफों का चित्रण किया है। इन उपन्यासों में उषा की स्त्रियाँ अपने क्रुर यथार्थ से मुठभेड़ करती हुईं परम्परागत मूल्यों को खारिज करती हैं। वे पुरूषों के समक्ष अपने को उपस्थित कर अपने पर लागू हर तरह के बंधन को तोड़ती है एवं नये जीवन की राह अपनाती है। 'रुकोगी नहीं राधिका' में राधिका व्यक्तिगत स्वतंत्रता के लिए संघर्षरत दिखाई गई है। वह किसी भी कीमत पर अपनी इच्छाओं की बलि नहीं देना चाहती है। वह अपनी निजत्व की रक्षा के लिए

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 जून 2015
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

सबसे अलग हो जाना उचित समझती है। यह निज स्वातंत्र्य विवेकहीन आचरण नहीं है, अपितु यह तो शिक्षित, विवेकशील और आधुनिक नारी के स्वाधिकार की माँग है। 'पचपन खंभे लाल दीवारे' उपन्यास विवाह संस्था की अनिवार्यता का खण्डन करता है। दुखी विवाहित जीवन से अकेले या तलाक लेकर रहना बेहतर है तथ्य को यह उपन्यास महत्व देता है।

प्रभा खेतान का 'आओ पेपे घर चले' नारीवादी विमर्श का एक उपन्यास है। इस उपन्यास में लेखिका ने अमेरिका के स्त्री जीवन के एकाकीपन को बड़ी संवेदनशीलता के साथ चित्रित किया है। इस उपन्यास की एक पात्र आइलिन औरत की दयनीय दशा की ओर इंगित करते हुए कहती है "औरत कहाँ नहीं रोती और कब नहीं रोती, वह जितना भी रोती है उतनी ही औरत होतो जाती है। पतियों और पाँच प्रेमियों के सम्पर्क में आने के बावजूद भी वह अन्ततः स्वयं को अकेला महसूस करती है और अपने कुत्ता पेपे को ही अपने दुख का भागीदार बना लेती है। छिन्नमस्ता में प्रभा खेतान ने एक ऐसे समाज का चित्रण किया है जहाँ स्त्री के लिए सारे रिश्ते-नाते बे.मायने हो जाते है। छिन्नमस्ता उपन्यास में एक स्त्री पर पल.पल हर स्तर पर होते शोषण को बेबाक दिखाया गया है। किन्तु अन्ततः शोषित नायिका शोषण के चरम स्तर को सहती हुई जागृत होती और विद्रोह कर देती है। छिन्नमस्ता की प्रिया बचपन में अपने ही भाई के हाथों यौन-उत्पीड़न का शिकार होती है, लेकिन उसे इस संदर्भ में कुछ न बोलने की हिदायत दी जाती है। प्रभा खेतान के लगभग सारे उपन्यासों में स्त्री-यातना के खिलाफ विद्रोह है।

ममता कालिया के उपन्यास 'बेघर' में स्त्री के विवाह से पूर्व पूर्णतः कुँवारी होने की धारणा को उजागर किया गया है। पुरूष प्रधान समाज में स्त्री का कुँआरापन केवल उसके पति के लिए ही है, किन्तु ऐसी मान्यता पुरूष पर लागू नहीं होती। पुरूष विवाह से पूर्व कहीं भी, किसी भी स्त्री के साथ शारीरिक संबंध बना सकता है, किंतु एक औरत के लिए यह संभव नहीं है। स्त्री के लिए समाज द्वारा यौन शुचिता के मानदण्ड निर्धारित किए हैं। इस उपन्यास की नायिका संजीवनी, जोकि परमजीत की प्रेमिका है, अपने को परमजीत के प्रति पूर्णतरू समर्पित कर देती है, किन्तु यह तथ्य उजागर होने पर कि वह पहले भी किसी अन्य पुरूष के साथ संबंध स्थापित कर चुकी है, अपने प्रेमी द्वारा प्रताड़ित की जाती है, किन्तु अन्ततः वह अपनी घुटन से छुटकारा पाने के लिए पति-पत्नी के आधार रहित रिश्ते को कोर्ट ले जाती है।

मैत्रेयी पुष्पा के 'चाक' की नायिका सारंग की विडम्बना उन समस्त स्त्रियों की बिडम्बना को चित्रित करती जो अपने उग्र पतियों से भावना के स्तर पर तो संबंध स्थापित कर लेती है किन्तु वह अपने मन में बसी पुरूष छवि के रूप में उसे स्वीकार नहीं कर पाती है। ये आधुनिक नारी की विद्रोही प्रवृति है कि सारंग पुरूष के प्रत्येक अत्याचार को चुनौती देती हुई उन सभी मान्यताओं को अस्वीकार कर देती है जो पुरूष के वर्चस्व की स्थापना के लिए बनाई गई है। इसीलिए वह अपने बेटे के शिक्षक के साथ संबंध स्थापित करती है जो उसकी दृष्टि में अनुचित नहीं है।

मेहरून्निसा परवेज के उपन्यासों में मुस्लिम और ईसाई समाज का चित्रण है। मुस्लिम समाज हो, चाहे ईसाई समाज चाहे हिंदू समाज ही क्यों न हो, स्त्री सर्वत्र शोषित और व्यथित है. "औरत तो जूठा खाने को आदी ही होती है, चाहे खाने के

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 जून 2015
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

मामले में हो, चाहे शारीरिक संबंध ;के मामले में हो।6

नासिरा शर्मा 'शाल्मली' में हिन्दू.समाज में विषम दांपत्य जीवन में यातना भोगती स्त्री का चित्र उपस्थित करती है। स्त्री हिन्दू.समाज में ही यातनाग्रस्त नहीं है, मुस्लिम-समाज में उसकी स्थिति और खराब है यह बात हमारे सामने 'ठीकरे की मंगनी' में आती है। सुनीता जैन ने प्राय: सभी उपन्यासों में असफल और विषम दांपत्य जीवन की कथा कही है।

कुसुम अंसल अपने उपन्यासों में स्त्री की उस व्यथा-कथा को प्रस्तुत करती है, जो इस तन और मन के विभाजन से उत्पन्न से होती है। पुरूष के लिए स्त्री शरीर भोग्य है, उसे उसके मन से कुछ लेना-देना नहीं है। 'तापसी' उपन्यास में वाकायदा शोधकार्य करके वृंदावन में रह रही विधवाओं के शोषण और उसकी पीड़ा का प्रमाणिक चित्र प्रस्तुत किया है।

निष्कर्ष

नारीवाद का संबंध स्त्रियों से जुड़े सवालों, बलात्कार, पत्नी प्रताड़ना, समान वेतन, यौन सुख आदिद्ध से तो है ही लेकिन नारीवाद इन्हीं सवालों तक सीमित नहीं है। वे स्त्री होने के साथ-साथ मनुष्य भी है, संसार की आधी जनता है। अत: बिषय उनसे संबंध करता है। नारीवाद सभी प्रकार की असमानता, दमन हटाकर एक समतामूलक समाज की स्थापना करना चाहती है। उक्त वर्णित उपन्यासों में भी इसकी झलक देखी जा सकती है।

संदर्भ ग्रंथ.

1 नारीवाद. यह आखिर क्या है, कमला भसीन, निगहत सईद खान, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1986

2 फेमिनिस्ट एक्सपीरिएन्सेज, सुशान बेसनेट

3 छिन्नमस्ता, प्रभा खेतान, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

4 आपका बंटी, मन्नू भंडारी, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली

5 कठगुलाब, मृदुला गर्ग, भारतीय ज्ञानपीठ

6 उसका घर, मेहरून्निसा परवेज